बच्चों की शिक्षा और समुदाय | मेरे अनुभव

जनक राम

"हैलो जी!" मोबाइल उठाकर मैंने बोला। दूसरी तरफ़ से बच्चे की आवाज़ आई "हैलो टीचर।" मैंने तुरन्त कॉल काटकर वापिस कॉल किया। बच्चे ने कॉल उठाया और अपना नाम बताया। बच्चे ने ही बात आगे बढ़ाई कि आज क्या खाया? क्या बना था खाने में? (छत्तीसगढ़ में हालचाल जानने और बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाला यह एक सामान्य तरीक़ा है)।

20 दिन हो चुके थे लॉकडाउन लगे। मैंने कहा, "सम्पूर्ण लॉकडाउन चल रहा है। तो इस समय तो हम सिर्फ़ आलू और सोयाबड़ी ही खा रहे हैं। तुम्हारे यहाँ क्या बना था?" बच्चे ने थोड़ा-सा समय लिया। फिर बोला, "टीचर वह क्या है न कि पापा बाहर गए हुए हैं और लॉकडाउन में वहीं फँस गए हैं। तो आज हम केवल भात खाए।"

मैंने अपने आप को सँभाला। फिर बोला माँ से बात कराओ। उनसे बात कर मैंने उनके परिवार की पूरी स्थिति को समझा। घर में उस समय तीन लोग रह रहे थे। चावल को छोड़कर खाने की बाक़ी सभी सामग्री समाप्त हो चुकी थी। बच्चे की माँ ने स्वाभिमान के कारण किसी से माँगा भी नहीं।

मैंने तुरन्त ही इस स्थिति को अपनी स्कूल की टीम व संस्था के साथियों के सामने रखा। अपनी टीम के साथियों से चर्चा व बातचीत करके यह पता चला कि इस प्रकार की स्थिति कई बच्चों के साथ थी। संस्था* ने तत्काल अपने स्तर पर उनकी मदद की। इनके अलावा भी ऐसे बहुत-से परिवारों को राशन-सामग्री पहुँचाई गई जिन्हें ज़रूरत तो थी, पर जो अपने स्वाभिमान के चलते माँग नहीं रहे थे। शिक्षक साथियों ने अपने-अपने क्षेत्र में सर्वे कर ऐसे ज़रूरतमन्द परिवारों की लिस्ट तैयार कर संस्था तक पहुँचाई। संस्था ने तुरन्त ही उनके लिए राशन-सामग्री उपलब्ध कराई। लाभार्थियों के स्वाभिमान का पूरा सम्मान करते हुए हमारी टीम ने राशन-सामग्री उन तक पहुँचाई। शिक्षक साथियों का सम्बन्ध बच्चों के साथ इतना माधुर्य और अपनापन लिए हुए है कि बच्चे बेझिझक अपनी बात साझा करते हैं।

इस लॉकडाउन के दौरान कई तरह के ख़ुलासे हुए। संस्था के कुछ साथियों ने बताया कि एक ऐसा इलाक़ा भी है जहाँ पिछली तीन पीढ़ी से राशन कार्ड ही नहीं बने हैं। तो ऐसे में उन्हें मदद कैसे मिलेगी? हमारी संस्था ने इस मुश्किल दौर में तो उनकी मदद कर दी, पर क्या उम्मीद है कि आगे उन्हें कोई मदद मिल पाएगी? इससे मेरा यह मानना और सशक्त हुआ कि नैतिक मूल्यों के साथ-साथ संवैधानिक मूल्यों की शिक्षा बच्चों के लिए ज़रूरी है ताकि वे प्रश्न करने वाले और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नागरिक बन सकें।

एक अनुभव यह भी रहा कि एक गाँव में कई लोग ज़बरदस्ती राशन की माँग करने लगे। कहने लगे कि हमें भी ज़रूरत है। हमने उनसे पूछा कि क्या आपके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है, तो उन्होंने कहा कि वे आगे के लिए इकट्ठा करना चाहते हैं। क्या पता लॉकडाउन कब खुलेगा। मैंने शान्त रहकर समझाया कि अभी हम उनकी मदद कर रहे हैं जिन्हें तत्काल ज़रूरत है। हमारे साथ वार्ड के पार्षद महोदय भी थे। उन्होंने भी कहा कि अगर स्थिति और बिगड़ती है तो सरकार मदद करेगी। वे समझने के लिए तैयार ही नहीं थे, पर हम अपनी बात पर डटे रहे। हमने उन सभी का नाम अपनी डायरी में दर्ज किया। इसके बाद वे वहाँ से चले गए। यह तनाव भरे पल थे। शिक्षा हमें स्थिति के अनुसार ढलना भी सिखाती है। हमारे लिए सुकून की बात यह थी कि हम इस कड़ी धूप में भी ज़रूरतमन्द लोगों तक पहुँच सके।

बच्चों की पढ़ाई

शुरुआत में फ़ोन के ज़रिए बच्चों से उनके हालचाल जानना, उनके साथ जुड़ना सुखद रहा। इसने हमको और बच्चों को तनाव के दौर से बाहर निकाला। बातों के साथ-साथ हम गीत गाते, कहानियाँ-कविताएँ भी सुनते-सुनाते। हालाँकि कभी-कभी ऐसा भी होता कि कान्फ्रेंस कॉल में बच्चों को जोड़ने में घण्टों बीत जाते पर एक भी बच्चा नहीं जुड़ पाता। कारण होता सिग्नल समस्या। फिर भी हम लगे रहते। कभी-कभी घण्टी बजती, कॉल उठता और फिर तुरन्त ही डिसकनेक्ट हो जाता। यह सभी शिक्षक साथियों का अनुभव रहा। लेकिन व्यक्तिगत चर्चाओं और फ़ोन कॉल के ज़रिए हम बच्चों की पढ़ाई-लिखाई से जुड़े रहे। इसमें हमें अभिभावकों का सहयोग भी मिला। जब अनलॉक का दौर शुरू हुआ तो अभिभावक मोबाइल अपने साथ ले जाने लगे और बच्चों के साथ हमारा सम्पर्क छूट गया। इस प्रकार हमारे सामने एक बड़ी चुनौती थी कि अब बच्चों की पढ़ाई कैसे आगे बढ़ेगी?

सभी शिक्षक साथियों ने बच्चों के लिए ऐसी वर्कबुक बनाना शुरू किया जिन्हें बच्चे ख़ुद पढ़कर सवालों के जवाब लिख सकें। यह इसलिए भी अच्छा उपाय था क्योंकि बच्चों के पास उनकी अगली कक्षा की पुस्तकें नहीं थीं। शिक्षक साथियों ने ख़ूब मेहनत की और सभी विषयों के लिए वर्कबुक बनाईं और बच्चों के घरों तक पहुँचाईं भी। इसमें सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया। शिक्षक साथी मास्क, फेस शील्ड, दस्ताने और सैनिटाइज़र का उपयोग करते हुए उचित शारीरिक दूरी बनाकर प्रत्येक सप्ताह वर्कबुक बच्चों के घरों पर पहुँचाते और पूरी की हुई वर्कबुक को वापिस एकत्र करते। बच्चों के जवाबों पर चर्चा फ़ोन के ज़रिए होती। हालाँकि यह अभ्यास भी उन बच्चों के लिए मुश्किल था जो अभी भी पढ़ने-लिखने की चुनौती का सामना कर रहे थे। भले ही अन्य शिक्षक साथियों की तरह मैं भी बच्चों के सीखने के स्तर अनुसार वर्कबुक बना रहा था, फिर भी सीमित समझ हम सभी के लिए एक चुनौती थी।

बच्चे, शिक्षक और समुदाय

बच्चों के सीखने-सिखाने को लेकर नियमित रूप से बात करने के लिए हमने समुदाय भ्रमण के दौरान सौहार्दपूर्ण चर्चा के ज़रिए समुदाय के सदस्यों व बच्चों के अभिभावकों से आत्मीय सम्बन्ध बनाए। हम जब भी और जहाँ भी मिलते हैं एक-दूसरे का हालचाल पूछते हैं और बच्चों के बारे में भी बेबाक राय रखते हैं। इससे हमें बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में मदद मिलती है। कोविड-19 महामारी के इस दौर में जब स्कूल बन्द हो गए तो बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखना हमारा पहला उद्देश्य रहा है। लॉकडाउन के नियमों में कुछ ढील दिए जाने के बाद हमने सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित करते हुए बच्चों की पढ़ाई-लिखाई को जारी रखने का विचार समुदाय के सामने रखा।

समुदाय के सदस्य तैयार हो गए। उन्होंने कक्षाओं के लिए सामुदायिक भवन में जगह भी दे दी। साथ ही गाँव के कुछ पढ़े-लिखे युवक-युवतियाँ बच्चों की शिक्षा के लिए काम करने आगे आए और अभी भी कर रहे हैं। स्वयंसेवियों के इस समूह में हमारे वे पुराने विद्यार्थी भी शामिल हैं, जिन्होंने शैक्षिक सत्र 2019-20 में दसवीं कक्षा पास की है। वे भी छोटे-छोटे समूह में प्राथमिक कक्षा के बच्चों के साथ उनकी पढ़ाई-लिखाई में मदद कर रहे हैं।

इसमें अभिभावकों और समुदाय के अन्य सदस्यों का सहयोग भी सराहनीय रहा है। कई अभिभावकों ने अपने आँगन को बच्चों की शिक्षा के लिए उपलब्ध कराया है। कई अन्य समाजसेवी संस्थाएँ भी हमारी मदद कर रही हैं। नतीजतन हम छोटे-छोटे समूह बना पाए हैं जो अभी सात गाँवों (जहाँ से बच्चे आते हैं) में जाकर बच्चों के साथ काम कर पा रहे हैं।

महामारी के दौरान यह चिन्ता लगातार बनी रही कि कोई बच्चा या शिक्षक या स्वयंसेवक कोविड-19 से संक्रमित न हो जाए क्योंकि सभी लोग कहीं न कहीं तो आ-जा रहे ही हैं। अभिभावक, बच्चे और शिक्षक सभी अपने रोज़मर्रा के कामों के लिए घर से बाहर जा रहे हैं और लोगों के सम्पर्क में आ रहे हैं। हालाँकि अपनी तरफ़ से तो हर कोई सुरक्षा के उचित उपाय अपना रहा है, पर फिर भी एक डर-सा बना रहता है। ऐसे तनावपूर्ण समय में तनाव से मुक्त रहना शिक्षकों, बच्चों व उनके अभिभावकों के लिए एक चुनौती है।

एक नई उम्मीद

समय के साथ स्थिति बदल रही है। लोग हिम्मत के साथ कोविड-19 का सामना कर रहे हैं। वे अपना मनोबल कमज़ोर नहीं होने दे रहे हैं। वे मास्क और सैनिटाइज़र के साथ जीना सीख रहे हैं। स्वच्छता का ख़याल रख रहे हैं और शारीरिक दूरी बरत रहे हैं। सबसे ज़्यादा ख़ुशी इस बात की है कि बच्चे अब तनाव मुक्त हैं। शिक्षक साथियों ने गीत और कविताएँ रिकॉर्ड कर बच्चों को भेजीं। शुरू के दौर में हमने जो वीडियो, कहानियाँ रिकॉर्ड की थीं वह अब बच्चों के पढ़ने-पढ़ाने में काम आ रही हैं। हम इस अनुभव को सकारात्मक नज़रिए से देख रहे हैं यह सोचकर कि बहुत-से बच्चों, अभिभावकों व शिक्षकों ने अपने मोबाइल फ़ोन की वास्तविक क्षमता को अब समझा है।

पहले जो अभिभावक बात करना नहीं चाहते थे, हमें अपने घर आने नहीं देना चाहते थे वे अब हमसे, शिक्षकों से व अपने बच्चों से भी खुलकर बात कर रहे हैं। कुछ अभिभावकों व समुदाय के लोगों ने अपनी समझ का दायरा बढ़ाया है। उन्होंने अपने ख़ाली आँगन, ख़ाली भवन को बच्चों को पढ़ाने के लिए खुले दिल से सौंपा है। कुछ लोग तो बच्चों को पढ़ाने-सिखाने में भी मदद कर रहे हैं। कुछ अभिभावकों ने अपने बच्चों के साथ-साथ अपने आस-पास के बच्चों की भी पढ़ाई-लिखाई में मदद करना शुरू किया है। उन्होंने कोविड-19 के इस दौर में अत्यन्त संवेदनशीलता दिखाई है जिससे बच्चों को तनाव से दूर रखने में मदद मिली है। उम्मीद है यह जज़्बा आगे भी बना रहेगा।

किसी भी समाज में शिक्षा ही वह केन्द्रीय व्यवस्था है जिससे व्यापक बदलाव आ सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समाज के शिक्षित सदस्यों के बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में मदद करने के लिए आगे आने की बात को पूरी शिद्दत से तवज्ज़ोह दी गई है और इस भागीदारी की अपेक्षा की गई है। इस दौर में एक बच्ची ने मुझे एक गीत बनाकर सुनाया है जिसे मैं अक्सर गुनगुनाता रहता हूँ। बच्ची द्वारा लिखे इस गीत के

साथ समाप्त करता हूँ—

ये सुन ना, ये तू सुन ना
कोरोना से है बचना तो
तू घर से बिना वजह बाहर निकल ना। ये...
निकलना है बहुत ही ज़रूरी तो
मास्क, दूरी और सैनिटाइज़र या साबुन उपयोग करना। ये...
अपने बड़े–बुज़ुर्गों का ध्यान है रखना
उनकी तहे दिल से चिन्ता है करना
जो हैं संक्रमित उनसे शारीरिक दूरी बनाना
पर प्यार व सेहत बनी रहे ये ध्यान रखना। ये...
हैं वो भी अपने जो हैं (डॉक्टर, पुलिस, नर्स, स्वच्छताकर्मी...) लड़ रहे कोरोना से
उनका सम्मान पहले है करना
यह कोरोना तो एक दिन चला जाएगा
फिर आपस में इसके लिए दिल में भेद क्यों है करना। ये...
ये सुन ना, ये सुन सुन ना...

*अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन



जनक राम ने विज्ञान में स्नातक और शिक्षा एवं समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। अज़ीम प्रेमजी संस्थान में दो साल की फेलोशिप पूरी करने के बाद दिसम्बर, 2016 से वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी में गणित के शिक्षक हैं। बतौर शिक्षक वे अपने विद्यार्थियों के साथ दोस्ती करना पसन्द करते हैं और साथ मिलकर गणित की प्रक्रियाओं को सीखने-समझने में दिलचस्पी रखते हैं। उनसे **janak.ram@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।